जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – जून 2021 ।। अंक – 11 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

जागरूकता, शारीरिक और मानसिक मजबूती बढ़ाना है, कोरोना को हराना है (पृष्ठ – 02)

वित्तीय समावेशन को रफ्तार देती रूपा दीदी (पृष्ठ – 03)

मास्क का उत्पादन कर मिसाल बनीं जीविका दीदियाँ (पृष्ठ – 04)

जीविका दीदियों की सजगता से गाँवों में बढ़ी जागरूकता

बिहार में जीविका समूह की दीदियाँ कोरोना वायरस से बचाव हेतु जन–जागरूकता लाने में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। भारत में कोरोना महामारी की दस्तक की खबर के उपरांत जीविका दीदियों ने गाँव के सभी गली–मोहल्लों में टोली बना घर–घर जाकर लोगों को कोराना के संक्रमण से बचाव एवं कोरोना टीका लगवाने के लिए जागरूकता फैला रही हैं।

यह टोली प्रतिदिन सुबह लोगों को जागरूक करने के लिए निकल पड़ती है। घर–घर जाकर लोगों को घर से बाहर निकलते समय मास्क का उपयोग करने, सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करने, घर से बेवजह नहीं निकलने, भीड़–भाड़ में जाने से परहेज करने एवं प्रशासन के आदेशों का पालन करने के लिए जागरूक कर रही हैं। दीदियाँ लोगों को गर्म पानी एवं काढ़ा पीने की सलाह भी देती हैं और 45 वर्ष से अधिक उम्र वाले तथा 18 वर्ष से 45 वर्ष के बीच आयु वाले लोगों को टीका लगवाने के लिए प्रेरित भी कर रही हैं।

यह टोली ग्रामीणों को बताती है कि बीमारी किसी भी तरह की हो, अगर हम सतर्क और जागरूक होकर उसका सामना करेंगे तो उस पर काबू पाने में आसानी होगी। कोरोना महामारी पर हमें काबू पाना है तो हर किसी को सतर्कता बरतनी होगी। तत्काल हम इस पर दो तरीके से काबू पा सकते हैं। पहला वैक्सीनेशन यानी टीकाकरण और दूसरा स्वच्छता और सोशल डिस्टेंसिंग यानी सामाजिक दूरी के नियमों का पालन कर। मास्क लगाना, दो गज की दूरी बनाकर रखना और बार–बार साबुन से अपने हाथों को धोना इसके तहत अपेक्षित है। फिलहाल हमारे देश में वैक्सीनेशन का काम तेजी से चल रहा है। 18 साल से ऊपर के नागरिकों को कोविशील्ड और कोवैक्सिन नाम की वैक्सीन लगाई जा रही है। देश में बड़े स्तर पर हो रहे वैक्सीनेशन का मकसद ज्यादा से ज्यादा लोगों को कोरोना वायरस के प्रभाव से बचाना और इसे फैलने से रोकना है। कोरोना से बचना है तो बाहरी लोगों से शारीरिक दूरी अनिवार्य है।

जीविका दीदियों द्वारा लोगों को प्रेरित कर टीकाकरण केंद्र तक पहुँचाया जा रहा है, जहाँ उन्हें कोराना का टीका लगाया जा रहा है। जीविका राज्य कार्यालय के सहयोग से नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के डॉक्टर तेज प्रकाश सिन्हा के साथ वीडियो कॉन्फ्रेन्सिंग के माध्यम से कोरोना से बचाव एवं प्रबंधन के उपरांत कोरोना के विरुद्ध जंग में दीदियाँ मानसिक रूप से और अधिक मजबूत हुई हैं। जीविका दीदियों को भरोसा है कि सभी के सहयोग से ही कोरोना को हरा कर जीत हासिल की जा सक्ती है।

जागरूकता, शारीरिक और मानसिक मजबूती बढ़ाना है, कोरोना को हराना है

पूर्णियाँ जिले के कसबा प्रखंड के सब्दलपुर गाँव में उजाला जीविका महिला ग्राम संगठन की जीविका दीदियाँ कोरोना वायरस से बचाव हेतु जन–जागरूकता लाने में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। भारत में कोरोना महामारी की दस्तक देने की खबरें आने के उपरांत यूनिसेफ और जीविका द्वारा संचालित स्वाभिमान परियोजना अंतर्गत जीविका दीदियों के सहयोग से सब्दलपुर गाँव के सभी गली मोहल्लों में टोली बनाकर घर–घर जाकर लोगों को कोराना के संक्रमण से बचाव एवं कोरोना टीका लगवाने के लिए जागरूक कर रही हैं। इस जागरूकता अभियान से प्रेरित होकर सब्दलपुर गाँव के लोगों ने शहर व बाहर के लोगों को एवं फेरी वालों को भी गाँव में न आने के लिए कह दिया गया है। गाँव की जीविका दीदियों का मानना है कि कोरोना से बचना है तो बाहरी लोगों से शारीरिक दूरी बनाए रखना जरूरी है। सब्दलपुर गाँव की जीविका दीदियों ने कोरोना के विरुद्ध जागरूकता की मिसाल पेश की है। जीविका दीदियों द्वारा लगभग 450 लोगों को प्रेरित कर टीकाकरण केंद्र तक पहुँचाया गया, जहाँ उन्हें कोराना का टीका लगाया गया। स्वाभिमान परियोजना अंतर्गत इस गाँव की दो सौ किशोरियों, नवविवाहिता, गर्भवती एवं धात्री महिलाओं के बीच कोरोना वायरस के संक्रमण से बचाव हेतु मास्क वितरित किया गया। इस महामारी के कारण ग्राम संगठन की बैठक बंद रहने के बावजूद इस टोली ने लोगों को शारीरिक रूप से मजबूत करने के लिए गाँव के करीब 500 परिवारों को घर–घर जाकर पोषण वाटिका लगाने लिए सब्जियों के बीज बाँटे। जिसके परिणाम स्वरुप आज गाँव के अधिकतर परिवारों को बिना बाजार गये ताजा हरी साग–सब्जी खाने को मिल रही है। ये हरी साग–सब्जियां लोगों को शारीरिक रूप से मजबूत कर कोराना से बचाव करने में मदद कर रही है। सब्दलपुर गाँव की जीविका दीदियों को भरोसा है कि सभी के सहयोग से ही कोरोना को हरा कर जीत हासिल की जा सकती है। कसबा प्रखंड में कई गाँवों में भी जीविका दीदियों द्वारा जन–जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है।

लॉकडाउन के दौरान मास्क निर्माण से मिली मदद

कटिहार जिले के मनिहारी प्रखंड के मनोहरपुर पंचायत की रीता देवी 2015 में राजा जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। इसके बाद उसने जीविका के माध्यम से ही कपड़ों की सिलाई करने का प्रशिक्षण प्राप्त किया और वह कपड़े सिल कर कुछ आमदनी कर लेती है। लेकिन रीता देवी के पास हमेशा इतना काम नहीं होता कि वह इससे पर्याप्त आय प्राप्त कर सके।

मनोहरपुर पंचायत स्थित जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ में संचालित मास्क उत्पादन एवं विपणन केंद्र में प्रतिदिन 15 से 16 जीविका दीदियाँ मास्क निर्माण कार्य में जुटी हैं। यहां प्रतिदिन एक से डेढ़ हजार मास्क का निर्माण हो रहा है। मनोहरपुर पंचायत की रीता देवी भी इस काम से जुड़ गई है।

इस साल कोरोना संक्रमण फैलने के बाद लॉकडाउन घोषित कर दिया गया। उसके पति को भी कोई काम नहीं मिल रहा था। ऐसे बुरे दौर से गुजर रही रीता देवी के लिए तब राहत भरी खबर आई जब उसे पता चला कि मनोहरपुर ग्राम पंचायत स्थित सीएलएफ के तहत मास्क निर्माण का काम शुरू होने वाला है। इसमें सिलाई का काम जानने वाली दीदियों को इस काम में लगाया जाना था। परिणाम स्वरूप रीता देवी ने भी सीएलएफ की अध्यक्ष दीदी से बात की और इस काम से जुड़ गई। मास्क की सिलाई के बदले उसे प्रति मास्क एक निश्चित राशि दी जा रही है। मास्क निर्माण के रोजगार से रीता देवी लॉकडाउन के दौरान हुई परेशानियों से मुक्त हो पायी। रीता देवी का कहना है कि लॉकडाउन के दौरान मास्क निर्माण का कार्य उनके जीवन में कोरोना काल में राहत की उम्मीद लेकर आया है जिससे उनको आर्थिक परेशानियों से मुक्ति मिली है और मास्क की जरुरत भी पूर्ण हो रही है। मास्क उत्पादन केंद्र से जुड़ने से वह तत्काल प्रतिदिन 500 से 600 रुपये की कमाई करने में सक्षम हुई है।

वित्तीय समावेशन को रफ्तार देती रूपा दीदी

डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के अंतर्गत बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित ग्राहक सेवा केंद्र बैंकों के पर्याय बने हुए हैं। सैकड़ों की तादाद में जीविका दीदियाँ बतौर बैंक सखी ग्रामीण जीवन में वित्तीय लेन–देन को गति प्रदान कर रही हैं और वित्तीय समावेशन को भी रफ्तार दे रही हैं। उन्ही में से एक हैं बक्सर जिले के नवानगर प्रखंड के सोनवर्षा गाँव में अप्रैल 2017 से दक्षिण बिहार ग्रामीण बैंक का ग्राहक सेवा केंद्र चला रही रूपा कुमारी। रूपा अभी बैंक सखी के रूप में लगभग पाँच हजार खाताओं का संचालन कर रही हैं और प्रति माह 25 से तीस हजार रूपया कमीशन प्राप्त कर रही हैं। रूपा पिछले दो साल से पुरे बिहार में सर्वाधिक कमीशन पाने वाली बैंक सखी बनी हुई हैं। यह राशि उन्हें बैंक के द्वारा ग्राहक सेवा केंद्र के माध्यम से खाता के संचालन और लेन–देन के लिए बतौर कमीशन मिलता है। रूपा के लिए यह बड़ी राशि है।

रूपा गाँव की गरीब एवं कम पढ़ी–लिखी महिलाओं के बीच वित्तीय समावेशन को रफ्तार दे ही रही हैं। साथ ही अपने पति और दो बेटियों के लिए भी संबल बन गई हैं। रूपा बैक के ग्राहकों और बैंक के बीच सेतु के रूप में कार्य कर रही हैं। लॉकडाउन के दौर में भी, जहाँ सब कुछ बंद रहा वहाँ ग्राहक सेवा केंद्र के माध्यम से रूपा ने ग्रामीणों की आवश्यकता के अनुसार रुपयों की जमा– निकासी में सहयोग दिया। कोरोना काल में भी इनके द्वारा किये गए कार्यों से ग्रामीण प्रभावित हैं। वे बताते हैं कि लॉकडाउन के दौरान उन्हें रुपयों की जमा –निकासी को लेकर चिन्ता थी। बैंक भी बंद हो गए थे। शहर जाने के लिए आवागमन भी बंद था। ऐसे में रूपा द्वारा चलाये जा रहे ग्राहक सेवा केंद्र से उन्हें राहत मिली।

आपदा को अवसर में बदला

रांको पंचायत खगड़िया सदर प्रखण्ड की रहने वाली हैं कंचन देवी। कंचन देवी 2008 से 'जय माँ काली' जीविका समूह से जुड़ी हैं। कंचन दीदी के लिए संयुक्त परिवार को चलाना बहुत मुश्किल का काम है। कंचन देवी के पति फोटोस्टेट की दुकान थीं। जिससे पुरे घर की जरूरत पुरी नहीं हो पाती थी। इसलिए दीदी ने सिलाई का काम सीखा और सिलाई करने लगी।

कपड़े सिलकर दीदी कुछ पैसे कमा लेती थी। फिर भी दीदी का घर चल नहीं पाता था। 2019 जुन में कंचन दीदी रांको पंचायत खगड़िया सदर प्रखंड में सी एन आरपी पद पर काम करने लगी। अब दीदी आर्थिक दृष्टि से थोड़ा मजबूत हो गई। मगर पिछले साल लॉकडाउन में जब कंचन दीदी के पति की फोटोस्टेट की दुकान बंद हो गई तो दीदी को परिवार चलाना मुश्किल हो गया। तभी दीदी को पता चला कि खगड़िया जीविका को बड़ी संख्या में मास्क बनाने का ऑर्डर मिला है और दीदी ने ठान लिया कि इस आपदा को अवसर में बदल देंगी। दीदी ने घर से काम करना शुरू किया और हजारों मास्क बनाये। पिछले साल दीदी ने मास्क निर्माण कर 17000 रूपये कमाये और परिवार को कुछ जरूरतों को पूरा किया। इस साल भी, जब कोरोना महामारी ने अपना सिर उठाया और दूसरी घातक लहर के बाद पुनः लॉकडाउन लगाया गया तो दीदी की हालत पहले से भी ज्यादा खराब हो गई। सी एन आरपी पद पर कार्य करने के बाद भी इतना नहीं बचा पाती थीं कि सभी जरूरतों को पुरा कर सके। दीदी ने आपदा की इस घड़ी को अवसर में बदला। दीदी ने पुनः हजारों मास्क की सिलाई किया और अपने परिवार को जरूरतों को पूरा किया। खगड़िया जिला में सिर्फ कंचन दीदी ही नहीं, ऐसी अन्य दीदियाँ भी हैं जिन्होंने आपदा को अवसर में बदला। रोजगार के लिए प्राप्त इस अवसर के लिए कंचन दीदी हर दिन जीविका को धन्यवाद देती हैं।

मास्क का उत्पादन कर मिसाल बनीं जीविका दीदियाँ

जीविका दीदियों ने संकट एवं मुश्किल से भरे कोरोना काल में भी हार नहीं मानी है और वे अपने स्तर पर लोगों को विभिन्न तरीकों से मदद पहुँचा रही हैं। पिछले वर्ष कोरोना की पहली लहर से दीदियों द्वारा किया जा रहा सेवा कार्य कोरोना की दूसरी लहर में भी जारी है। कोरोना की दूसरी लहर में जब एक बार फिर संकट आया तब जीविका दीदियों ने मास्क रूपी ढ़ाल से लोगों को बचाने का कार्य आरंभ किया। मास्क की निरंतर बढ़ती मांग को देखते हुए जीविका समूहों ने इसकी निर्बाध एवं ससमय आपूर्ति के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी। कोरोना से बचाव और लोगों को बेहतर सुविधा देने के लिए जिस प्रकार सरकार लगातार तत्पर है, उसी प्रकार जीविका दीदियाँ भी इस महामारी को मात देने में सरकार के साथ जुड़ी हुई हैं। कोरोना की दूसरी लहर के साथ ही जीविका दीदियां पूरे बिहार में मास्क बनाने में लग गयीं। सभी केन्द्रों पर कोरोना बचाव के सभी मानकों (प्रोटोकॉल) का पालन किया जा रहा है। उनके द्वारा मास्क उत्पादन केन्द्रों पर सामाजिक दूरी, मास्क का उपयोग एवं बार–बार हाथ धोने के लिए लोगों को जागरूक करने का कार्य भी किया जा रहा है। कच्चे माल की उपलब्धता से लेकर मास्क उत्पादन एवं उसके विपणन का सारा कार्य दीदियां ही संभाल रही हैं। मास्क उत्पादन केन्द्रों के अलावे कई दीदियों द्वारा अपने घरों से भी मास्क का उत्पादन का कार्य किया जा रहा है।

संकट की घड़ी में जीविका दीदियाँ मिसाल बन गयी हैं जो न केवल लोगों की जान बचाने में अहम योगदान दे रही हैं बल्कि रोजगार के साधन भी उपलब्ध कराने में सफल रही हैं। जीविका दीदियों ने कोरोना की दूसरी लहर के दौरान अब तक 6.22 करोड़ मास्क बनाएँ हैं, जबकि दीदियों के पास मास्क बनाने के कुल 7.8 करोड़ के ऑर्डर प्राप्त हुए हैं। पंचायती राज संस्थाओं को अब तक 5.20 करोड़ मास्क की आपूर्ति की जा चुकी है। पंचायती राज विभाग ग्रामीण क्षेत्रों में बिहार सरकार की ओर से मास्क का नि:शुल्क वितरण कर रहा है इसलिए विभाग की ओर से मास्क की ज्यादा मांग है। इसके अलावे भी राज्य के कई जिलों में मनरेगा, स्वास्थ्य विभाग, आईसीडीएस, शिक्षा विभाग, जिला प्रशासन, पुलिस, बैंक आदि ने भी बड़ी संख्या में जीविका दीदियों द्वारा बनाए गए मास्क की खरीद की है और दीदियों के कार्यों को सराहा है।

दीदियों की जीवन्तता की कहानी यहीं खत्म नहीं होती है। कई केन्द्रों पर दीदियों ने आधुनिक मशीन भी स्थापित कर लिए है, यही कारण है कि अब मास्क उत्पादन की गति पे तेजी हो आयी है। दीदियों द्वारा उत्पादित मास्क कॉटन का है और दो लेयर का है। यह मास्क महज 15 रुपये में सरकारी से लेकर गैर सरकारी कार्यालयों द्वारा खरीदे जा रहे हैं। ये मास्क ना सिर्फ सस्ते हैं बल्कि कॉटन से बने होने के कारण इनमें सांस लेने में भी कोई परेशानी नहीं होती तथा यह पूरी तरह उपयोगी है। कई दीदियों ने मास्क उत्पादन में भी कई प्रकार के नवाचारों को अंजाम दिया है। कई दीदियों द्वारा मास्क के उपर मधुबनी पेंटिंग बनाया जा रहा है तो कई दीदियों द्वारा छोटे बच्चों के मास्क के ऊपर विभिन्न प्रकार के आकर्षक चित्र बनाये जा रहो हैं। इन मास्कों की बिकी भी खूब हो रही है।

कोरोना काल में जीविका दीदियों ने कोरोना वारियर्स के रूप में खुद को स्थापित किया। इस कार्य के माध्यम से रोजगार के संकट के बीच हजारों परिवारों की आर्थिक स्थिति भी उन्होंने संभाली। बीते लगभग दो माह में जीविका दीदियों ने अब तक कुल 75.2 करोड़ रुपये से अधिक का कारोबार किया। इसके लिए जिला प्रशासन तथा राज्य एवं केंद्र सरकार, जीविका के कार्यों की प्रशंसा कर रहे हैं।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्री ब्रज किशोर पाठक – विशेष कार्य पदाधिकारी
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, समस्तीपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, पूर्णिया
- श्री बिप्लव सरकार – प्रबंधक संचार, कटिहार
- श्री विकास कुमार राव – प्रबंधक संचार, सुपौल
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, बक्सर